ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218
PP. NO.- 372-375
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

# समकालीन भारत की रक्षा नीति और क्षेत्रीय सुरक्षाः एक सामरिक विश्लेषण

**डॉ0 विशाल कुमार श्रीवास्तव**
असि0 प्रोफेसर– सैन्य अध्ययन, डी0ए0वी0 कालेज, कानपुर (उ0प्र0) भारत

**Received-11.06.2019, Revised-18.06.2019, Accepted-24.06.2019 E-mail : vksdav1@gmail.com**

***सारांश –*** *समकालीन भारत की रक्षा नीति राष्ट्रीय संप्रभुता, क्षेत्रीय अखंडता, सीमाओं की सुरक्षा तथा दक्षिण एशिया में शांति और स्थिरता बनाए रखने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। भारत की भौगोलिक स्थिति, चीन और पाकिस्तान के साथ सीमावर्ती चुनौतियाँ, हिंद महासागर क्षेत्र में बढ़ती सामरिक प्रतिस्पर्धा, आतंकवाद, साइबर हमले तथा आधुनिक युद्ध तकनीकों का विकास भारतीय रक्षा नीति को निरंतर प्रभावित करते हैं। वर्ष 2019 इस दृष्टि से विशेष महत्त्व रखता है, क्योंकि इस वर्ष भारत की सुरक्षा व्यवस्था को आतंकवाद, सीमा पार संघर्ष, वायु शक्ति, समुद्री सुरक्षा और रक्षा आधुनिकीकरण से संबंधित अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। फरवरी 2019 में पुलवामा आतंकवादी हमला और उसके बाद बालाकोट में भारतीय वायुसेना की कार्रवाई तथा भारत–पाकिस्तान के बीच हवाई संघर्ष ने राष्ट्रीय सुरक्षा और प्रतिरोधक क्षमता से संबंधित बहस को प्रमुखता प्रदान की। इसी वर्ष भारत ने रक्षा क्षेत्र में स्वदेशी उत्पादन, सैन्य आधुनिकीकरण और अंतरराष्ट्रीय सामरिक साझेदारियों को भी महत्त्व दिया।*

*प्रस्तुत लेख का उद्देश्य वर्ष 2019 के संदर्भ में भारत की रक्षा नीति का सामरिक विश्लेषण करना तथा क्षेत्रीय सुरक्षा के विभिन्न आयामों का अध्ययन करना है। इसमें भारत की सैन्य क्षमता, सीमावर्ती चुनौतियों, आतंकवाद–रोधी रणनीति, हिंद महासागर में भारत की भूमिका, रक्षा कूटनीति और तकनीकी आधुनिकीकरण का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि प्रभावी रक्षा नीति केवल सैन्य शक्ति पर निर्भर नहीं करती, बल्कि कूटनीति, आर्थिक क्षमता, तकनीकी आत्मनिर्भरता, खुफिया समन्वय और क्षेत्रीय सहयोग का संयुक्त परिणाम होती है।*

***कुंजीभूत शब्द–*** *भारतीय रक्षा नीति, राष्ट्रीय सुरक्षा, क्षेत्रीय स्थिरता, सामरिक विश्लेषण, सैन्य आधुनिकीकरण।*

**प्रस्तावना–** राष्ट्रीय सुरक्षा किसी भी संप्रभु राष्ट्र के अस्तित्व, विकास और राजनीतिक स्वतंत्रता का आधार है। किसी देश की सुरक्षा का अर्थ केवल उसकी सीमाओं की रक्षा करना नहीं, बल्कि उसकी आर्थिक व्यवस्था, सामाजिक स्थिरता, सामरिक हितों, तकनीकी संसाधनों और नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करना भी है। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश के लिए रक्षा नीति का महत्त्व और अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि इसकी सीमाएँ अनेक देशों से जुड़ी हुई हैं तथा इसके आसपास का क्षेत्र ऐतिहासिक, राजनीतिक और सामरिक दृष्टि से संवेदनशील है।

भारत की रक्षा नीति का मूल उद्देश्य राष्ट्रीय हितों की रक्षा करना, बाहरी आक्रमण को रोकना, आतंकवाद और अन्य सुरक्षा खतरों का मुकाबला करना तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शांति और स्थिरता को बढ़ावा देना है। स्वतंत्रता के बाद भारत ने सामान्यतः रणनीतिक स्वायत्तता, शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व और विवादों के कूटनीतिक समाधान पर बल दिया। तथापि, बदलती अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों ने भारतीय रक्षा नीति को अधिक व्यावहारिक, बहुआयामी और तकनीक–आधारित बनाया है।

वर्ष 2019 भारतीय सुरक्षा इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव था। 14 फरवरी 2019 को जम्मू–कश्मीर के पुलवामा में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के काफिले पर आतंकवादी हमला हुआ, जिसमें 40 जवानों की मृत्यु हुई। इसके बाद 26 फरवरी को भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान के बालाकोट क्षेत्र में जैश–ए–मोहम्मद के प्रशिक्षण शिविर को निशाना बनाने की कार्रवाई की। अगले दिन भारत और पाकिस्तान के बीच हवाई संघर्ष हुआ, जिसमें भारतीय वायुसेना के विंग कमांडर अभिनंदन वर्धमान को पाकिस्तान ने हिरासत में लिया और 1 मार्च 2019 को उन्हें भारत को सौंप दिया। इन घटनाओं ने आतंकवाद के विरुद्ध कार्रवाई, सैन्य प्रतिरोध, संकट प्रबंधन और परमाणु हथियार संपन्न पड़ोसी देशों के बीच संघर्ष को नियंत्रित रखने की चुनौतियों को उजागर किया। इसी समय भारत को चीन के साथ वास्तविक नियंत्रण रेखा पर शांति बनाए रखने, हिंद महासागर में अपनी सामरिक उपस्थिति मजबूत करने तथा आधुनिक हथियार प्रणालियों के विकास की आवश्यकता भी थी। इसलिए वर्ष 2019 की रक्षा नीति का अध्ययन केवल तत्कालीन घटनाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारत की दीर्घकालीन सामरिक प्राथमिकताओं और क्षेत्रीय सुरक्षा दृष्टिकोण को समझने का अवसर भी प्रदान करता है।

**अध्ययन के उद्देश्य एवं विश्लेषण की पद्धति–** इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं: ' वर्ष 2019 में भारत की रक्षा नीति की प्रमुख विशेषताओं का विश्लेषण करना।

- भारत–पाकिस्तान और भारत–चीन संबंधों में विद्यमान सुरक्षा चुनौतियों का अध्ययन करना।
- आतंकवाद, सीमा सुरक्षा तथा समुद्री सुरक्षा के सामरिक महत्त्व को स्पष्ट करना।
- सैन्य आधुनिकीकरण, रक्षा उत्पादन और अंतरराष्ट्रीय सहयोग की भूमिका का मूल्यांकन करना।
- भारतीय रक्षा नीति के समक्ष उपस्थित चुनौतियों और भविष्य की संभावनाओं का विवेचन करना।

यह लेख ऐतिहासिक घटनाओं, रक्षा नीति संबंधी दस्तावेजों, सरकारी प्रकाशनों तथा सामरिक अध्ययन की सामान्य अवधारणाओं पर आधारित वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक अध्ययन है। वर्ष 2019 को इसके प्रमुख अध्ययन–काल के रूप में लिया गया है, ताकि उस समय की परिस्थितियों के आधार पर भारतीय रक्षा नीति के स्वरूप को समझा जा सके।

**वर्ष 2019 में भारतीय रक्षा नीति का स्वरूप–** वर्ष 2019 में भारत की रक्षा नीति में पारंपरिक सैन्य शक्ति

और गैर–पारंपरिक सुरक्षा उपायों के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास दिखाई देता है। भारत ने एक ओर अपनी सीमाओं की सुरक्षा, आतंकवाद के विरुद्ध कार्रवाई और सैन्य तैयारियों को प्राथमिकता दी, वहीं दूसरी ओर रक्षा कूटनीति, समुद्री सहयोग और सैन्य संगठनों के बीच बेहतर समन्वय पर भी बल दिया। इस अवधि में रक्षा नीति के तीन प्रमुख आयाम उभरकर सामने आए। पहला, आतंकवाद और सीमा पार सुरक्षा खतरों के विरुद्ध प्रभावी प्रतिरोधक क्षमता विकसित करना। दूसरा, थलसेना, वायुसेना और नौसेना की परिचालन क्षमताओं को आधुनिक बनाना। तीसरा, बदलती अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों में भारत की रणनीतिक स्वायत्तता को बनाए रखना।

भारत की रणनीतिक स्वायत्तता का अर्थ है कि देश अपने राष्ट्रीय हितों के आधार पर स्वतंत्र निर्णय ले सके। भारत विभिन्न प्रमुख शक्तियों के साथ रक्षा संबंध विकसित करता रहा, लेकिन किसी एक शक्ति पर पूर्ण निर्भरता से बचने का प्रयास भी करता रहा। रूस के साथ पारंपरिक रक्षा संबंध, अमेरिका के साथ बढ़ता सामरिक सहयोग, फ्रांस के साथ रक्षा प्रौद्योगिकी में साझेदारी तथा जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ समुद्री सहयोग इसी व्यापक दृष्टिकोण के उदाहरण हैं। वर्ष 2019 के अंत में एक महत्त्वपूर्ण संस्थागत निर्णय लिया गया, जब सरकार ने चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (CDS) का पद सृजित करने की घोषणा की। इसका उद्देश्य तीनों सेनाओं के बीच समन्वय बढ़ाना, संयुक्त सैन्य योजना को प्रोत्साहित करना और रक्षा संसाधनों के उपयोग को अधिक प्रभावी बनाना था। रक्षा मंत्रालय की वर्षांत समीक्षा में इसे उच्च रक्षा प्रबंधन के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण सुधार के रूप में रेखांकित किया गया। यह निर्णय इस तथ्य को स्वीकार करता था कि आधुनिक युद्ध में किसी एक सेना की स्वतंत्र क्षमता पर्याप्त नहीं है। वायु शक्ति, थलसेना की कार्रवाई, नौसैनिक समर्थन, उपग्रह आधारित निगरानी, खुफिया सूचना और संचार व्यवस्था के बीच समन्वय आवश्यक है।

**भारत–पाकिस्तान संबंध और आतंकवाद की चुनौती–** भारत की रक्षा नीति के सामने पाकिस्तान से संबंधित सुरक्षा चुनौतियाँ लंबे समय से प्रमुख रही हैं। जम्मू–कश्मीर में आतंकवादी गतिविधियाँ, नियंत्रण रेखा पर संघर्षविराम उल्लंघन, घुसपैठ और आतंकवादी संगठनों की गतिविधियाँ द्विपक्षीय संबंधों को प्रभावित करती रही हैं। परमाणु हथियारों की मौजूदगी इस स्थिति को और संवेदनशील बनाती है, क्योंकि सीमित सैन्य संघर्ष भी व्यापक संकट का रूप ले सकता है।

**पुलवामा हमला और बालाकोट कार्रवाई:** 14 फरवरी 2019 को पुलवामा में सीआरपीएफ के काफिले पर आत्मघाती आतंकवादी हमला हुआ, जिसमें 40 जवानों की मृत्यु हुई। भारत सरकार ने इस हमले के लिए पाकिस्तान स्थित जैश–ए–मोहम्मद को जिम्मेदार ठहराया। इसके बाद भारत ने आतंकवादी ढाँचे के विरुद्ध कार्रवाई करने का निर्णय लिया। 26 फरवरी 2019 को भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान के बालाकोट क्षेत्र में जैश–ए–मोहम्मद के प्रशिक्षण शिविर को निशाना बनाया। भारत के विदेश सचिव के आधिकारिक वक्तव्य के अनुसार, इस कार्रवाई को संभावित आतंकवादी हमलों के खतरे के संदर्भ में पूर्व–निवारक कार्रवाई बताया गया था।

इस घटना का सामरिक महत्त्व केवल सैन्य कार्रवाई तक सीमित नहीं था। इसने आतंकवाद के विरुद्ध भारत की प्रतिक्रिया संबंधी नीति, सीमा पार कार्रवाई की संभावनाओं और संकट के समय राजनीतिक–सैन्य निर्णयों की भूमिका पर व्यापक चर्चा को जन्म दिया। 27 फरवरी 2019 को पाकिस्तान की वायुसेना की कार्रवाई के बाद दोनों देशों के बीच हवाई संघर्ष हुआ। भारतीय वायुसेना के विंग कमांडर अभिनंदन वर्धमान को पाकिस्तान ने हिरासत में लिया और 1 मार्च को उन्हें भारत वापस भेज दिया गया। इस घटनाक्रम ने स्पष्ट किया कि सीमित सैन्य कार्रवाई भी तेजी से व्यापक द्विपक्षीय तनाव में बदल सकती है।

**प्रतिरोधक क्षमता और संकट प्रबंधन:** प्रतिरोधक क्षमता का अर्थ ऐसी सैन्य और राजनीतिक शक्ति विकसित करना है, जिससे विरोधी पक्ष किसी आक्रामक कार्रवाई के संभावित परिणामों को ध्यान में रखे। वर्ष 2019 की घटनाओं ने भारत के लिए यह प्रश्न महत्त्वपूर्ण बना दिया कि आतंकवादी हमलों का जवाब किस प्रकार दिया जाए, ताकि राष्ट्रीय सुरक्षा की रक्षा हो और संघर्ष अनियंत्रित न हो।

इस संदर्भ में तीन बातें आवश्यक हैं। पहली, आतंकवादी नेटवर्क के बारे में विश्वसनीय खुफिया जानकारी प्राप्त करना। दूसरी, सैन्य कार्रवाई के उद्देश्य और सीमा को स्पष्ट रखना। तीसरी, कार्रवाई के बाद कूटनीतिक संवाद और संकट प्रबंधन के रास्ते खुले रखना।

भारत–पाकिस्तान संबंधों में परमाणु प्रतिरोधक क्षमता के कारण युद्ध की लागत अत्यंत अधिक हो सकती है। इसलिए राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए सैन्य तैयारी के साथ–साथ संचार माध्यमों, राजनयिक संपर्कों और अंतरराष्ट्रीय संकट–नियंत्रण व्यवस्थाओं का उपयोग भी आवश्यक है।

**भारत–चीन संबंध और उत्तरी सीमाओं की सुरक्षा–** भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा का दूसरा प्रमुख आयाम चीन के साथ संबंध हैं। दोनों देशों के बीच आर्थिक सहयोग और कूटनीतिक संपर्क होने के बावजूद सीमा विवाद, वास्तविक नियंत्रण रेखा पर सैन्य तैनाती और एशिया में प्रभाव बढ़ाने की प्रतिस्पर्धा सुरक्षा संबंधों को प्रभावित करती है। भारत और चीन के बीच सीमा का पूर्ण सीमांकन न होना कई क्षेत्रों में वास्तविक नियंत्रण रेखा की अलग–अलग व्याख्याओं को जन्म देता है। हिमालयी क्षेत्र की दुर्गम भौगोलिक परिस्थितियाँ, सीमित संपर्क मार्ग और अत्यधिक ऊँचाई पर सैनिकों की तैनाती सैन्य संचालन को जटिल बनाती हैं। ऐसे क्षेत्र में सड़क, पुल, हवाई पट्टी, संचार प्रणाली और रसद सुविधाओं का विकास राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। वर्ष 2019 में भारत की चीन नीति में प्रतिस्पर्धा और सहयोग दोनों पक्ष उपस्थित थे। दोनों देश सीमा पर शांति बनाए रखने के लिए संवाद के महत्त्व को स्वीकार करते थे, लेकिन उनके सामरिक हितों में अंतर भी था। भारत के लिए आवश्यक था कि वह सीमा पर पर्याप्त निगरानी क्षमता विकसित करे, सैन्य रसद को मजबूत बनाए तथा किसी संभावित संकट के समय शीघ्र प्रतिक्रिया देने में


*PIF-3.007 /ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

सक्षम रहे। चीन की बढ़ती नौसैनिक क्षमता और हिंद महासागर क्षेत्र में उसकी उपस्थिति भी भारत की सामरिक गणना का हिस्सा थी। चीन की आर्थिक एवं सामरिक गतिविधियों को केवल सैन्य खतरे के रूप में देखना पर्याप्त नहीं होगा; भारत को क्षेत्रीय संपर्क, व्यापार, निवेश और बहुपक्षीय संस्थाओं के स्तर पर भी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार भारत–चीन संबंधों में प्रभावी रक्षा नीति का आधार सैन्य तैयारी, सीमा प्रबंधन, कूटनीतिक संवाद और क्षेत्रीय साझेदारियों का संतुलित संयोजन होना चाहिए।

**हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की सामरिक भूमिका–** भारत की भौगोलिक स्थिति उसे हिंद महासागर क्षेत्र में विशेष सामरिक महत्त्व प्रदान करती है। भारत की ऊर्जा आपूर्ति, विदेशी व्यापार और समुद्री संपर्कों का बड़ा हिस्सा समुद्री मार्गों से जुड़ा है। इसलिए समुद्री व्यापार की स्वतंत्रता, समुद्री डकैती की रोकथाम, तटीय सुरक्षा तथा प्रमुख समुद्री मार्गों की निगरानी भारतीय रक्षा नीति के आवश्यक अंग हैं। वर्ष 2019 में भारतीय नौसेना ने हिंद महासागर के विभिन्न महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में मिशन–आधारित तैनाती की। रक्षा मंत्रालय की वर्षांत समीक्षा के अनुसार, भारतीय नौसेना के जहाज और विमान फारस की खाड़ी, अदन की खाड़ी, दक्षिणी एवं मध्य हिंद महासागर, मलक्का जलडमरूमध्य के निकटवर्ती क्षेत्रों और बंगाल की खाड़ी में तैनात किए जाते रहे। इन तैनातियों का उद्देश्य समुद्री हितों की रक्षा, समुद्री जागरूकता बढ़ाना और मित्र देशों को आवश्यकता के समय सहायता प्रदान करना था। भारत की समुद्री रणनीति को व्यापक रूप से तीन स्तरों पर समझा जा सकता है।

पहला, समुद्री मार्गों की सुरक्षा। भारत के लिए तेल, गैस और अन्य आवश्यक वस्तुओं का निर्बाध आयात महत्त्वपूर्ण है। समुद्री मार्गों में अस्थिरता होने पर अर्थव्यवस्था और राष्ट्रीय सुरक्षा दोनों प्रभावित हो सकती हैं।

दूसरा, तटीय निगरानी और सुरक्षा। 2008 के मुंबई आतंकवादी हमलों के बाद तटीय सुरक्षा के महत्त्व को विशेष रूप से पहचाना गया। वर्ष 2019 तक समुद्री निगरानी, तटरक्षक बल की भूमिका, नौसेना और अन्य एजेंसियों के समन्वय तथा संदिग्ध गतिविधियों की पहचान पर निरंतर बल दिया जा रहा था।

तीसरा, क्षेत्रीय सहयोग। भारत अपने पड़ोसी समुद्री देशों के साथ संयुक्त अभ्यास, प्रशिक्षण, मानवीय सहायता और आपदा राहत के माध्यम से संबंध मजबूत करता रहा। SAGAR अर्थात् Security and Growth for All in the Region की अवधारणा इसी दृष्टिकोण से जुड़ी है।

हिंद महासागर में भारत की भूमिका केवल सैन्य उपस्थिति तक सीमित नहीं होनी चाहिए। समुद्री पर्यावरण की सुरक्षा, समुद्री संसाधनों का सतत उपयोग, प्राकृतिक आपदाओं के दौरान सहायता और छोटे द्वीपीय देशों की क्षमता वृद्धि भी क्षेत्रीय स्थिरता के महत्त्वपूर्ण आधार हैं।

**क्षेत्रीय सुरक्षा पर भारतीय रक्षा नीति का प्रभाव–** भारत की रक्षा नीति का प्रभाव केवल देश की सीमाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह दक्षिण एशिया और हिंद महासागर क्षेत्र की राजनीतिक एवं सामरिक परिस्थितियों को भी प्रभावित करती है। भारत की भौगोलिक स्थिति, आर्थिक क्षमता और सैन्य शक्ति उसे क्षेत्रीय सुरक्षा व्यवस्था में महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रदान करती है।

पहला प्रभाव, क्षेत्रीय प्रतिरोधक क्षमता पर पड़ता है। जब भारत अपनी सीमाओं की निगरानी, सैन्य तैयारी और रक्षा प्रौद्योगिकी को मजबूत करता है, तो संभावित आक्रामक गतिविधियों की लागत बढ़ सकती है। किंतु सैन्य शक्ति का विस्तार पड़ोसी देशों की सुरक्षा संबंधी धारणाओं को भी प्रभावित कर सकता है। इसलिए रक्षा आधुनिकीकरण के साथ पारदर्शिता और विश्वास निर्माण के उपाय आवश्यक हैं।

दूसरा प्रभाव, आतंकवाद के विरुद्ध क्षेत्रीय सहयोग पर पड़ता है। आतंकवादी नेटवर्क कई बार विभिन्न देशों की सीमाओं का उपयोग करते हैं। इसलिए आतंकवाद से निपटने के लिए खुफिया सूचनाओं का आदान–प्रदान, वित्तीय नेटवर्क पर निगरानी और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के साथ सहयोग आवश्यक है।

तीसरा प्रभाव, समुद्री सुरक्षा पर दिखाई देता है। हिंद महासागर में भारत की नौसैनिक उपस्थिति समुद्री मार्गों की सुरक्षा, समुद्री डकैती की रोकथाम और आपदा राहत में योगदान कर सकती है। इससे छोटे द्वीपीय देशों और अन्य समुद्री पड़ोसियों के साथ सहयोग बढ़ाने की संभावनाएँ उत्पन्न होती हैं।

चौथा प्रभाव, क्षेत्रीय कूटनीति पर पड़ता है। नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, श्रीलंका, मालदीव और अन्य पड़ोसी देशों के साथ रक्षा प्रशिक्षण, आपदा प्रबंधन और सुरक्षा संवाद क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ावा दे सकते हैं। इसके लिए भारत को अपने सहयोगी देशों की संप्रभुता, विकास संबंधी प्राथमिकताओं और सुरक्षा चिंताओं का सम्मान करना चाहिए।

इस प्रकार प्रभावी भारतीय रक्षा नीति का उद्देश्य केवल सैन्य श्रेष्ठता प्राप्त करना नहीं, बल्कि ऐसी क्षेत्रीय व्यवस्था को प्रोत्साहित करना भी होना चाहिए जिसमें सुरक्षा, आर्थिक विकास और शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ निर्मित हों।

**भविष्य की संभावनाएँ एवं नीतिगत सुझाव–** वर्ष 2019 के अनुभवों के आधार पर भारतीय रक्षा नीति को अधिक प्रभावी बनाने के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

**1. संयुक्त सैन्य क्षमता का विकासः** थलसेना, वायुसेना और नौसेना के बीच एकीकृत योजना, संचार तथा संसाधन प्रबंधन को मजबूत बनाया जाना चाहिए।

**2. रक्षा अनुसंधान में निवेशः** स्वदेशी हथियार प्रणालियों, साइबर रक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ड्रोन तकनीक और सुरक्षित संचार व्यवस्था के विकास को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

**3. सीमा अवसंरचना का विकासः** सीमावर्ती क्षेत्रों में सड़क, पुल, हवाई संपर्क और विश्वसनीय संचार नेटवर्क विकसित किए जाने चाहिए, ताकि सैनिकों और आवश्यक सामग्री की आवाजाही सुगम हो सके।

**4. समुद्री सुरक्षा में सहयोगः** हिंद महासागर क्षेत्र के देशों के साथ संयुक्त अभ्यास, समुद्री निगरानी, मानवीय सहायता और आपदा राहत की व्यवस्थाओं को मजबूत किया जाना चाहिए।


*PIF-3.007 /ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

**5. कूटनीतिक संकट प्रबंधनः** भारत–पाकिस्तान तथा भारत–चीन संबंधों में तनाव के समय संवाद के माध्यम बनाए रखना आवश्यक है। इससे गलत आकलन और अनियंत्रित सैन्य संघर्ष की आशंका कम की जा सकती है।

**6. निजी क्षेत्र की भागीदारीः** रक्षा उत्पादन में निजी उद्योगों, स्टार्टअप और विश्वविद्यालयों की भागीदारी बढ़ाई जानी चाहिए। इससे तकनीकी नवाचार, रोजगार और उत्पादन क्षमता में वृद्धि हो सकती है।

**7. साइबर एवं सूचना सुरक्षाः** सैन्य प्रतिष्ठानों, महत्त्वपूर्ण डिजिटल नेटवर्क और संचार प्रणालियों की सुरक्षा के लिए नियमित परीक्षण, विशेषज्ञ प्रशिक्षण और संस्थागत समन्वय को बढ़ावा देना चाहिए।

इन सुझावों का मूल उद्देश्य भारत को ऐसी रक्षा व्यवस्था प्रदान करना है जो वर्तमान चुनौतियों का सामना करने के साथ भविष्य के अनिश्चित सुरक्षा वातावरण के अनुकूल भी हो।

**निष्कर्ष–** समकालीन भारत की रक्षा नीति और क्षेत्रीय सुरक्षा का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि राष्ट्रीय सुरक्षा एक बहुआयामी अवधारणा है। इसमें सैन्य शक्ति, राजनीतिक नेतृत्व, कूटनीति, आर्थिक संसाधन, वैज्ञानिक अनुसंधान और सामाजिक स्थिरता सभी की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। वर्ष 2019 भारतीय रक्षा नीति के अध्ययन में इसलिए विशेष स्थान रखता है, क्योंकि पुलवामा आतंकवादी हमला, बालाकोट कार्रवाई और उसके बाद भारत–पाकिस्तान के बीच हवाई संघर्ष ने राष्ट्रीय सुरक्षा के अनेक जटिल प्रश्नों को सामने रखा। इन घटनाओं ने आतंकवाद के विरुद्ध प्रभावी कार्रवाई, सैन्य प्रतिरोधक क्षमता और संकट प्रबंधन के बीच संतुलन की आवश्यकता को रेखांकित किया। साथ ही चीन के साथ सीमा संबंधी चुनौतियों तथा हिंद महासागर में बढ़ती सामरिक प्रतिस्पर्धा ने भारत के लिए दीर्घकालीन सैन्य योजना और क्षेत्रीय सहयोग को आवश्यक बनाया। वर्ष 2019 में चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ के पद की स्थापना की घोषणा संयुक्त सैन्य संचालन और उच्च रक्षा प्रबंधन में सुधार की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम थी। इसके अतिरिक्त स्वदेशी रक्षा उत्पादन, आधुनिक तकनीकों के उपयोग और अंतरराष्ट्रीय रक्षा साझेदारियों का विस्तार भारतीय रक्षा नीति की प्रमुख प्राथमिकताओं में शामिल रहा। फिर भी केवल सैन्य आधुनिकीकरण से स्थायी सुरक्षा सुनिश्चित नहीं की जा सकती। इसके लिए खुफिया एजेंसियों का प्रभावी समन्वय, सीमावर्ती अवसंरचना, आर्थिक सामर्थ्य, तकनीकी आत्मनिर्भरता और सक्षम कूटनीति भी आवश्यक हैं। भारत को अपनी रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखते हुए विभिन्न देशों के साथ सहयोग बढ़ाना चाहिए तथा क्षेत्रीय विवादों के शांतिपूर्ण समाधान को प्रोत्साहित करना चाहिए।

अंततः कहा जा सकता है कि भारत की रक्षा नीति का वास्तविक सामरिक उद्देश्य राष्ट्रीय संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा के साथ–साथ एक स्थिर, सुरक्षित और सहयोगपूर्ण क्षेत्रीय व्यवस्था का निर्माण करना है। सैन्य शक्ति और कूटनीतिक विवेक का संतुलित उपयोग ही भारत को भविष्य की सुरक्षा चुनौतियों का प्रभावी सामना करने में सक्षम बना सकता है।

**सन्दर्भ ग्रंथ सूची**


1. भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय (2019). वार्षिक प्रतिवेदन 2018–19. रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
2. भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय (2019). Year End Review – 2019, Ministry of Defence. प्रेस सूचना ब्यूरो, भारत सरकार। (आधिकारिक दस्तावेज देखें)
3. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय (26 फरवरी 2019). Statement by Foreign Secretary on the Strike on JeM Training Camp at Balakot.
4. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय (27 फरवरी 2019). Statement by Official Spokesperson on 27 February 2019. प्रेस सूचना ब्यूरो, भारत सरकार।
5. भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय. ।ददनंस त्मचवतज 2018–19. (रक्षा मंत्रालय का प्रतिवेदन
6. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय (2020). ।ददनंस त्मचवतज 2019–20. विदेश मंत्रालय, भारत सरकार।
7. भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय. Defence Production and Export Promotion Policy से संबंधित सरकारी प्रकाशन एवं रक्षा उत्पादन संबंधी दस्तावेज।
8. भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय. Chief of Defence Staff और Department of Military Affairs की स्थापना संबंधी सरकारी घोषणाएँ, 2019।
9. Tellis, Ashley J. (2001). India's Emerging Nuclear Posture: Between Recessed Deterrent and Ready Arsenal- RAND Corporation.
10. Cohen, Stephen P. (2001). India: Emerging Power- Brookings Institution Press.
11. Pant, Harsh V. (2019). India's Foreign Policyl; An Overview- Manchester University Press.
12. Mohan, C. Raja (2012). Samudra Manthan: Sino-Indian Rivalry in the Indo-Pacific. Carnegie Endowment for International Peace.


*****